खिड़की

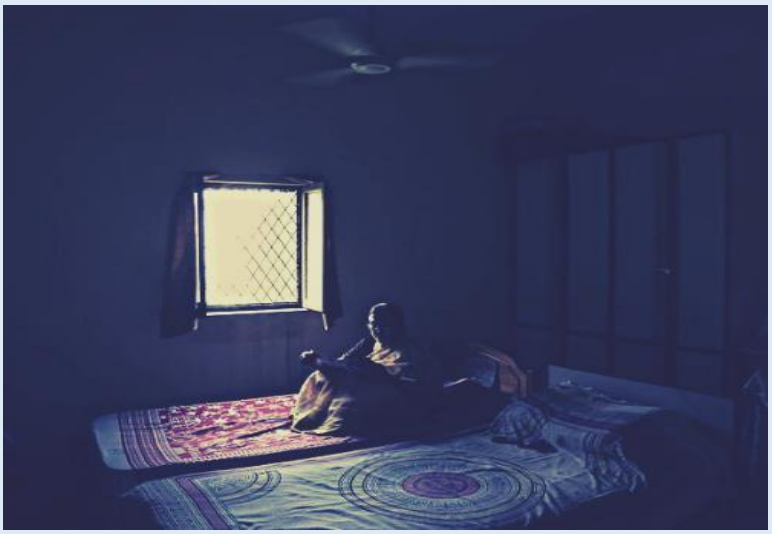

खिड़की से झाँकती, वह ख्यालों में रहती ,

नदियाँ आँखों से उसकी बहती,

फिर भी ह्रदय को थाम कर कहती,

'एक दिन तो लौटकर आयेगा'।

था उसका जो सारा संसार,

बचपन से दिया था जिसे इतना प्यार,

रहता था हर पल उसका इंतज़ार,

वो 'एक दिन तो लौटकर आएगा'।

ना जाने कितना समय गुजरा किये बिना बात,

बहुत मुश्किल से कटते थे अब ये दिन रात,

यह कैसे हो गए थे हालात

लेकिन 'एक दिन तो लौटकर आएगा'।

बेचारी उसकी माँ, कितना बड़ा था उसका दिल,

होती थी उसे रोज़ इतनी मुश्किल,

काश बेटे की एक झलक हो जाये हासिल,

बोलती रही 'एक दिन तो लौटकर आएगा'।

इसी बात का था उसे डर,

वृद्धाश्रम ही ना बन जाये घर,

उसका मन आया आशंका से भर,

फिर भी थी उम्मीद की 'एक दिन तो लौटकर आएगा'।

लेकिन पूछता ना कोई उसका हाल,

ना कोई करता उसकी देखभाल,

दोहराने लगी मन में सवाल,

आखिर 'कब वो लोटकर आएगा'?

-पूत कपूत हो सकता है लेकिन माता कुमाता नहीं होती

Harshita (10-B)